

महिला सशक्तिकरण का ग्रामीण परिवार एवं सामाजिक संरचना पर प्रभाव

प्रख्या राज¹ एवं डॉ. सुल्तान सिंह²

¹ शोधार्थी, समाज शास्त्र-विभाग

² प्रोफेसर, समाज शास्त्र-विभाग

मोनाड विश्वविद्यालय, हापुर

सारांश

महिला सशक्तिकरण ग्रामीण विकास, पारिवारिक स्थिरता तथा सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। ग्रामीण भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका लंबे समय तक मुख्यतः घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल, कृषि श्रम तथा पारिवारिक दायित्वों तक सीमित रही है। शिक्षा, आर्थिक अवसर, स्वयं सहायता समूह, सूक्ष्म-वित्त, राजनीतिक सहभागिता, डिजिटल तकनीक तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के विस्तार ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य ग्रामीण परिवार तथा सामाजिक संरचना पर महिला सशक्तिकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना है।

मुख्य संकेतक: ग्रामीण परिवार, सामाजिक संरचना, स्वयं सहायता समूह, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय-निर्माण, सामाजिक सहभागिता, ग्रामीण विकास।

परिचय

भारत की ग्रामीण सामाजिक संरचना में परिवार सामाजिक संगठन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार के भीतर महिलाओं की स्थिति केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित नहीं करती, बल्कि बच्चों के विकास, परिवार के स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक सुरक्षा तथा व्यापक सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का श्रम कृषि, पशुपालन, घरेलू उत्पादन, छोटे व्यवसाय और पारिवारिक देखभाल में

महत्वपूर्ण योगदान देता है, लेकिन लंबे समय तक उनके योगदान को आर्थिक एवं सामाजिक निर्णयों में समान अधिकार के रूप में मान्यता नहीं मिल सकी। इस संदर्भ में महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विषय नहीं है, बल्कि परिवार और सामाजिक संरचना में शक्ति, संसाधन और निर्णय के वितरण में परिवर्तन की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं की ऐसी क्षमता और स्थिति से है जिसमें वे अपने जीवन, परिवार, आर्थिक संसाधनों और सामाजिक गतिविधियों से जुड़े निर्णयों में प्रभावी भागीदारी कर सकें। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, संपत्ति, रोजगार, वित्तीय सेवाओं, राजनीतिक सहभागिता, सामाजिक सम्मान और निर्णय लेने की क्षमता जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। ग्रामीण भारत में स्वयं सहायता समूहों ने इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2013 के एक अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं में निर्णय-निर्माण क्षमता और संसाधनों तक पहुँच से संबंधित परिवर्तन दर्ज किए गए थे।

अध्ययन की आवश्यकता

ग्रामीण भारत में सामाजिक और आर्थिक विकास के बावजूद लैंगिक असमानता की अनेक संरचनात्मक समस्याएँ बनी हुई हैं। ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति, वित्तीय सेवाओं, तकनीक तथा निर्णय-निर्माण में पुरुषों की तुलना में विभिन्न प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि महिला सशक्तिकरण परिवार की संरचना और ग्रामीण समाज में किस प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण परिवारों में महिला सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और घरेलू निर्णय-निर्माण के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
3. महिला सशक्तिकरण के बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पारिवारिक कल्याण पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. स्वयं सहायता समूहों की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका का अध्ययन करना।
5. महिला सशक्तिकरण के ग्रामीण सामाजिक संरचना और सामुदायिक सहभागिता पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

6. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रमुख बाधाओं की पहचान करना।
7. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1. महिला सशक्तिकरण ग्रामीण परिवार की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करता है?
2. क्या आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं की पारिवारिक स्थिति को मजबूत करती है?
3. स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण में किस प्रकार योगदान करते हैं?
4. महिला सशक्तिकरण का बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. महिला सशक्तिकरण ग्रामीण सामाजिक संबंधों और सामुदायिक सहभागिता को किस प्रकार प्रभावित करता है?
6. ग्रामीण महिलाओं के पूर्ण सशक्तिकरण में कौन-कौन सी सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ मौजूद हैं?

साहित्य समीक्षा

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण पर उपलब्ध साहित्य से पता चलता है कि महिलाओं के समूह-आधारित संगठन आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं। सिंह और कौर के अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक संसाधनों, व्यक्तिगत विकास, बच्चों की शिक्षा एवं विवाह से जुड़े निर्णयों तथा सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी में सुधार की ओर संकेत किया गया।

पाहुजा और सिंह (2013) ने ग्रामीण महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन करते हुए निर्णय-निर्माण तथा आर्थिक सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण आयाम माना। उनके अध्ययन में अधिकांश उत्तरदाताओं में मध्यम स्तर की निर्णय-निर्माण क्षमता तथा संसाधनों तक कुछ स्तर की पहुँच पाई गई।

तमिलनाडु में किए गए एक अध्ययन में स्वयं सहायता समूह आधारित सूक्ष्म-वित्त से जुड़ी महिलाओं में आय, बचत और व्यय जैसे आर्थिक संकेतकों में परिवर्तन तथा घरेलू निर्णयों में भागीदारी में वृद्धि की सूचना दी गई। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि आर्थिक संसाधनों तक पहुँच पारिवारिक शक्ति-संबंधों को प्रभावित कर सकती है।

हरिका, रवितेजा और नागराजू (2020) ने आंध्र प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 600 परिवारों का अध्ययन किया। अध्ययन में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों का परीक्षण किया गया तथा लंबे समय तक स्वयं सहायता समूहों से जुड़े सदस्यों में अपेक्षाकृत बेहतर सशक्तिकरण की स्थिति दर्ज की गई।

कुमार और उनके सहकर्मियों (2021) ने पाँच भारतीय राज्यों की 1,470 ग्रामीण महिलाओं के आँकड़ों का अध्ययन किया। अध्ययन में स्वयं सहायता समूह की सदस्यता का महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया। विशेष रूप से आय पर नियंत्रण, ऋण संबंधी निर्णयों तथा समूह गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण रही। हालांकि, घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण और परिवार के भीतर सम्मान जैसे गहरे लैंगिक मानदंडों में परिवर्तन सीमित पाया गया।

शोध क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं साहित्य-आधारित शोध पर आधारित है। इसमें 2010 से 2025 के बीच प्रकाशित शोध-पत्रों, ग्रामीण महिला सशक्तिकरण से संबंधित अध्ययनों तथा स्वयं सहायता समूहों पर उपलब्ध शोध साहित्य का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में महिला सशक्तिकरण को आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक तथा सामुदायिक आयामों में समझा गया है।

महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण सामाजिक संरचना

महिला सशक्तिकरण का प्रभाव केवल परिवार तक सीमित नहीं रहता। महिलाओं की सामूहिक भागीदारी ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं, समुदाय और स्थानीय शासन को भी प्रभावित कर सकती है।

1. सामाजिक सहभागिता

स्वयं सहायता समूह महिलाओं को घर से बाहर सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देते हैं। नियमित बैठकों, प्रशिक्षण, बैंकिंग और सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक संपर्क बढ़ सकते हैं।

2. सामाजिक पूंजी का निर्माण

सामाजिक पूंजी में विश्वास, सहयोग, नेटवर्क और सामूहिक कार्रवाई जैसी विशेषताएँ शामिल होती हैं। ग्रामीण महिलाओं के समूह इन तत्वों को विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। शोध में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सामाजिक पूंजी और महिलाओं के सशक्तिकरण के बीच संबंध पाया गया है।

3. सामुदायिक निर्णयों में भागीदारी

महिलाओं की सामूहिक शक्ति बढ़ने पर वे केवल निजी पारिवारिक मामलों तक सीमित न रहकर सार्वजनिक समस्याओं पर भी अपनी राय व्यक्त कर सकती हैं। पश्चिम बंगाल में किए गए अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों की सामूहिक सार्वजनिक निर्णय-प्रक्रिया को महिलाओं की सामाजिक वैधता और सामुदायिक अधिकारिता से जोड़ा गया।

4. पंचायत एवं राजनीतिक सहभागिता

सशक्त महिलाएँ ग्राम पंचायत, ग्राम सभा तथा स्थानीय विकास गतिविधियों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती हैं। राजनीतिक सहभागिता महिलाओं को स्थानीय संसाधनों, योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के संबंध में अपनी प्राथमिकताएँ रखने का अवसर देती है।

5. लैंगिक संबंधों में परिवर्तन

महिला सशक्तिकरण पारंपरिक पुरुष-प्रधान सामाजिक व्यवस्था में धीरे-धीरे परिवर्तन ला सकता है। महिलाओं की आर्थिक भूमिका और सार्वजनिक सहभागिता बढ़ने पर परिवार और समुदाय में उनके प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन की संभावना बढ़ती है। हालांकि यह परिवर्तन सभी समुदायों में समान गति से नहीं होता।

स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रमुख संस्थागत माध्यमों में से एक हैं। इन समूहों में सामान्यतः बचत, ऋण, प्रशिक्षण, आय-सृजन, सामाजिक जागरूकता और सामूहिक कार्रवाई जैसी गतिविधियाँ होती हैं।

क्षेत्र	संभावित प्रभाव
बचत	महिलाओं की वित्तीय सुरक्षा में वृद्धि
ऋण	आर्थिक गतिविधियों के लिए पूँजी तक पहुँच

रोजगार	आय-सृजन के अवसर
प्रशिक्षण	कौशल एवं आत्मविश्वास में वृद्धि
समूह सहभागिता	सामाजिक नेटवर्क का विस्तार
घरेलू निर्णय	निर्णय क्षमता में वृद्धि
सामुदायिक कार्य	सार्वजनिक सहभागिता में वृद्धि
राजनीतिक जागरूकता	स्थानीय संस्थाओं में भागीदारी
सामाजिक जागरूकता	अधिकारों एवं योजनाओं की जानकारी

2021 के बड़े अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव के साथ महिलाओं के नियंत्रण और निर्णय संबंधी सशक्तिकरण में वृद्धि पाई गई। 2024 के अध्ययन ने भी स्वयं सहायता समूहों को ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास और सतत विकास से जोड़ा।

महिला सशक्तिकरण के सकारात्मक प्रभाव

महिला सशक्तिकरण के ग्रामीण परिवार और सामाजिक संरचना पर निम्नलिखित प्रमुख प्रभाव देखे जा सकते हैं:

1. महिलाओं की घरेलू निर्णय क्षमता में वृद्धि।
2. परिवार की आय के स्रोतों में विविधता।
3. बचत एवं वित्तीय सेवाओं तक बेहतर पहुँच।
4. बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सक्रिय भूमिका।
5. स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी निर्णयों में भागीदारी।
6. महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि।
7. सामुदायिक संगठनों में सहभागिता।
8. सामाजिक नेटवर्क और सामूहिक सहयोग में वृद्धि।
9. पंचायत एवं सार्वजनिक गतिविधियों में भागीदारी की संभावना।
10. आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता में वृद्धि।

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण ग्रामीण परिवार और सामाजिक संरचना में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। महिला की आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा, सामाजिक सहभागिता, वित्तीय संसाधनों तक पहुँच और सामूहिक संगठन परिवार में उसकी निर्णयकारी भूमिका को मजबूत कर सकते हैं। स्वयं सहायता समूह इस प्रक्रिया में विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि वे महिलाओं को बचत और ऋण के साथ-साथ सामाजिक नेटवर्क, प्रशिक्षण, सामूहिक निर्णय और सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ते हैं। उपलब्ध शोधों में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के आर्थिक तथा सामाजिक सशक्तिकरण में सकारात्मक परिवर्तन के प्रमाण मिले हैं।

फिर भी महिला सशक्तिकरण को केवल आर्थिक आय या स्वयं सहायता समूह की सदस्यता से परिभाषित नहीं किया जा सकता। वास्तविक सशक्तिकरण में महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता, सामाजिक सम्मान, संसाधनों पर अधिकार, राजनीतिक सहभागिता, गतिशीलता और अपनी पसंद के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता शामिल है। उपलब्ध शोध यह भी दर्शाता है कि आर्थिक सशक्तिकरण के बावजूद गहरे पितृसत्तात्मक मानदंड और घरेलू लैंगिक असमानताएँ बनी रह सकती हैं।

संदर्भ सूची

1. कुमार, एन., रघुनाथन, के., एरिएटा, ए., जिलानी, ए., एवं पांडे, एस. (2021)। सामूहिकता की शक्ति महिलाओं को सशक्त बनाती है: भारत में स्वयं सहायता समूहों से साक्ष्य। *विश्व विकास*, 146, 105579।
2. घोष, एस., महापात्रा, एम. एस., टोन्डर, एन., एवं टोन्डर, डी. (2024)। महिला सशक्तिकरण के सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करना: भारत में स्वयं सहायता समूहों के बीच एक अध्ययन। *जर्नल ऑफ़ ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप रिसर्च*, 13(4)।
3. पाहुजा, एस., एवं सिंह, ए. के. (2013)। स्वयं सहायता समूह: ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का एक साधन। *इंडियन जर्नल ऑफ़ एक्सटेंशन एजुकेशन*, 49(1-2), 112-114।
4. सिंह, एस., एवं कौर, एस. (2012)। महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव। *जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मोबिलाइज़ेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट*, 7(2), 255-258।
5. हरिका, के., रवितेजा, के., एवं नागारू, वी. (2020)। तीन आयामों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: ग्रामीण आंध्र प्रदेश का एक अनुभवजन्य अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़*

सोशल साइंसेज, 9(4), 263-271।

6. तमिलाज्की, एल., एवं आर्किटेक्चर, पी. के. (2018)। तमिलनाडु में स्वयं सहायता समूह माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट माइक्रोबायोलॉजी एंड एप्लाइड साइंसेज*, 7(4), 1402-1410।
7. साहा, आई., सरकार, ए., बिस्वास, पी., पाल, पी., एवं सिंह, वाई. जे. (2018)। छत्तीसगढ़ में मत्स्य पालन आधारित स्व-सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण। *जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मोबिलाइज़ेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट*, 13(3), 419-425।
8. कुमार, आर., सुवर, डी., एवं मिश्रा, पी. (2018)। बिहार में महिला स्वयं सहायता समूहों की प्रभावशीलता की विशेषताएँ। *वॉलंटस: स्वैच्छिक और गैर-लाभकारी संगठनों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल*, 29(5)।
9. डेगन, एच.-ए., एवं अन्य। (2020)। क्या महिला स्वयं सहायता समूह सतत विकास में योगदान दे सकते हैं? उत्तरी भारत से क्षमता परिवर्तन के प्रमाण। *जर्नल ऑफ़ ह्यूमन डेवलपमेंट एंड कैपेबिलिटीज़*, 21(2), 137-160।
10. चेकर, जे. ज़ेड., एवं कॉर्बेट, पी. ई. सी. (2024)। महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा सार्वजनिक निर्णय लेना और महिला सशक्तिकरण में इसका योगदान: पश्चिम बंगाल, भारत से साक्ष्य। *विश्व विकास परिप्रेक्ष्य*, 33, 100549।